शोध मंथन Vol. XIV No.II Apr.-June 2023 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.870 (SJIF)

महायोगी अरविन्द एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती के शिक्षा दर्शन की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आवश्यकता।

प्राप्तिः 01.06.2023
स्वीकृतः 25.06.2023

42

बबिता चौधरी
असिस्टेंट प्रोफेसर
श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, गजरौला (उ0प्र0)

अरूणा जौहरी
शोधार्थी
श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, गजरौला (उ0प्र0)
ईमेलः *arunajohari786@gmail.com*

सारांश

महायोगी अरविन्द और महर्षि दयानन्द के शिक्षा दर्शन की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आवश्यकता को स्वीकारा गया है। जिन्होंने आधुनिक शिक्षा प्रणाली में हमारी संस्कृति को सुरक्षित किया। और इस प्रकार भारत की वर्तमान शैक्षिक समस्याओं की कसौटी पर महायोगी अरविन्द तथा स्वामी जी के शैक्षिक विचारों के प्रासांगिक निष्कर्ष निकाले हैं।

प्रस्तावना

प्राचीन काल में हमारे देश के ऋषि–मुनियों ने एक ऐसी सुखबद्ध शिक्षा प्रणाली प्रचलित थी। जिसके कारण भारत विश्व गुरू कहा गया संपूर्ण संसार के लोग यहाँ आकर शिक्षा प्राप्त करने में गौरव का अनुभव करते थे जिस समय संसार के अन्य देशों के लोग पशुवत जीवन व्यतीत कर रहे थे उस समय भी भारत के ऋषि–मुनि सुसभ्य व संस्कृत भाषा के माध्यम से ब्रह्मज्ञान प्राप्त करने में लगे थे। हमारे देश की शिक्षा वेदों, पुराणों, उपनिशदो तथा भारतीय धर्म व संस्कृति पर आधारित थी। शिक्षा का माध्यम हमारी संस्कृति का स्रोत, धर्म की धुरी सभ्यता का उद्वम आचरण की संहिता तथा भारतीय भाषाओं की जननी देववाणी संस्कृत थी। शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य की शारीरिक मानसिक बौद्धिक व अध्यात्मिक शक्तियों का सर्वांगीण विकास कर उसे एक चरित्रवान व नैतिक बनाना था शिक्षा एक ऐसा साधन मानी जाती भी जिसके द्वारा मनुष्य का सही निर्माण हो सके।

परन्तु सैकड़ो वर्षों की पराधीनता ने भारतीय शिक्षा व संस्कृति के प्रसार व गम्भीर्य को सिकोड़–समेत व विनिष्ट करने की चेष्टा कर एक विकट परिस्थिति उत्पन्न कर दी थी तथा सैकड़ो प्रतिकूल अवस्थाओं के बीच भी यह अपनी रक्षा करने में समर्थ सिद्ध हुई। आधुनिक काल में शिक्षा का इतिहास उन द्वेंदों का इतिहास है। जिनमें प्राचीन, अर्वाचीन तथा रूढिवाद तथा प्रगतिवाद साम्राज्यवाद, राष्ट्रवाद, उदारवाद और उपयोगितावार के घात–प्रतिघात अपनी क्षीणकाय काया को समेटती शिक्षा की स्रोतस्विनी निरन्तर में अपनी अग्रसर होती गई।

तत्पश्चात पराधीन काल में शक हूण कुषाण मुगल व अंग्रेज, सभी ने अपने–अपने तरीकों से भारत की सभ्यता शिक्षा व संस्कृति पर कुठाराघात किया। एक विकट सी परिस्थिति उत्पन्न हो गयी थी

ऐसी परिस्थिति में आत्मरक्षा के लिए भारतवासियों ने वेद से उत्पन्न अति प्राचीन सनातन धर्म को हिन्दू धर्म कहा। इसके फलस्वरूप जो भारत वासी अब तक धर्म को धर्म के रूप में मानते थे वे अब साम्प्रदायिक दृष्टिकोण अपनाकर अपने को हिन्दू और दूसरों को विभिन्न धर्मावलम्बी मानने को विवश हो गये।

इन कुप्रथाओं को हटाने के उद्देश्य से हिन्दू समाज अपने विविध बंधन में बंधने लगा। विदेश गमन प्रायः निशिद्ध हो गया तथा हिन्दू राज शक्ति के अभाव की पूर्ति के लिए समाज के संरक्षण की व्यवस्था पुरोहितो ने अपने हाथ में ले ली। मुसलमानों के द्वारा जबरदस्ती धर्म परिवर्तन कराये जाने से अपनी रक्षा के लिए हिन्दूओं की जाति भेद प्रथा और अधिक दृढ़ रूप से समाज के कंधे पर लाद दी। मुसलमानों का अनुकरण करते हुए नारी सम्मान बनाये रखने के लिए पर्दा प्रथा व बाल विवाह को स्वीकार किया गया धीरे–धीरे ऐसी अवस्था हो गई कि स्वभाविक और सरल मार्ग द्वारा आत्म–विकास न कर पाने पर समाज ने तंत्र–मंत्र का सहारा लिया। चारो तरफ अशिक्षा का वातावरण था। मुसलमानों ने हिन्दू शिक्षा व संस्कृति पर कोई ध्यान नहीं दिया वस्तुतः धर्म, शिक्षा समाज व्यवस्था, उद्योग, वाणिज्य, संस्कृति आदि सभी में उन दिनों भारत पतित और पथ भ्रांत हो गया था। इस स्थिति के अंतिम भाग में आयी पश्चिमी संस्कृति व जाति के विषेशकर अंग्रेज लोग। प्रारम्भ में तो व्यापार के बहाने धन लूटना ही उन लोगों का मुख्य प्रयोजन था। बाद में उन्होंने अपना अधिकार कर लिया। और अपनी संस्कृति का प्रचार कर भारतीय संस्कृति पर कुठाराघात किया। अंग्रेजी के सांस्कृतिक अभियान का उद्देश्य यही था कि भारतवासी अखिल भारतीय स्तर पर अंग्रेजों के साथ सामाजिक व्यवहार के समय हर प्रकार से परिचमी संस्कृति का अनुकरण करे और उसे स्वीकार करे वर्तमान भारत में प्रचलित शिक्षा प्रणाली अंग्रेजो की देन है इसका हमारे देश की प्राचीन शिक्षा परम्परा से कोई सम्बन्ध नहीं है प्रचलित शिक्षा प्रणाली केवल बौद्धिक प्रक्रिया व दिमागी कसरत बन कर रह गई है न कि नैतिक, धार्मिक या आध्यात्मिक मूल्यों की प्रप्ति। प्रचलित शिक्षा प्रणाली में संस्कृत की घोर उपेक्षा कर, विदर्षी पाश्चात्य भाषा अंग्रेजी को सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान दिया, जो मात्र भौतिक वाद को ही बढ़ावा देती है।

6 फरवरी 1835 की मैकाले की शिक्षा नीति तथा 1854 के वुड का घोषणा पत्र द्वारा भी पाश्चात्य संस्कृति को ही बढ़ावा दिया गया परन्तु भारतीय संस्कृति, सभ्यता तथा ज्ञान, विज्ञान के बारे में नहीं बताया गया। मकाले का उद्देश्य था– ''हमे भारत में इस तरह की श्रेणी पैदा करने का यत्न करना चाहिए जो हमारे उन करोड़ो भारतवासियों के बीच जिनपर हम षासन करते है एक दूसरे को समझाने–बुझाने का काम दे सके। ये लोग ऐसे होने चाहिए जो केवल खून व रंग में हिन्दुस्तानी हो। किन्तु रूचि, भाषा, व भावों व विचारों की अष्ट से अंग्रेज हो। इस तरह वह भारत पर अपना पंचम लहराना चहाता था।

इस तरह से सर चार्ल्स ग्रांट के मस्तिष्क की उपज कि भारतीयों को अंग्रेजी शिक्षा दी जाए। और यूरोपिए शिक्षा का बोलवाला हो। इसके साथ ही ईसाई धर्म प्रचारको को ईसाई धर्म प्रचार की छूट मिली। यह बात अगल है कि वे अपने मनतव्य में पूरी तरह सफल नहीं हो पाये । अंग्रेजी शिक्षा आज भी भारतीयों के दिल व दिमाग पर पूरी तरह अस्तित्व बनाये हुए है।

परन्तु भारत के एक प्रबुद्ध वर्ग ने अंग्रेजों के इस षडयंत्र को समझा तथा शिक्षा आंदोलन प्रारम्भ किया। जिसमें स्वामी दयानंद सरस्वती, महात्मागांधी, राजाराम मोहन राय, मदन मोहन मालवीय, स्वामी विवेका नन्दजी ने अपने अपने प्रयासों से भारतीय शिक्षा व संस्कृति को बचाने का प्रयास किया। उन्होंने

भारतीय जीवन–दर्षन एवं जीवन पद्धति के आधार पर अलग–अलग शिक्षा संस्थानों की स्थापना की अनेक महापुरुषों ने अनुभव किया कि जब तक हमारे देश में हमारी आवश्कताओं और परिस्थियों के अनुकूल शिक्षा की व्यवस्था न होगी तब तक हम शिक्षा के द्वारा वांछित सफलता प्राप्त न कर सकेंगे इस सम्बन्ध में कुछ महत्वपूर्ण उद्‌गार निम्नलिखित हैं–

महात्मा गाँधी का विचार है– 1921 में यंग इण्डिया में लिखा था– कि में यह शिक्षा विदेशी संस्कृ ति पर आधारित है इसके द्वारा न तो हृदय का विकास हो पाता है न हाथ का, केवल बुद्धि का विकास होता है इससे भारत के अधिकांश लोग वंछित रह जाते है क्योंकि शिक्षा का माध्यम विदेशी था यह गाँव के उधोग व व्यवसाय के लिए अनुकुल नहीं

पंडित मदन मोहन मालवीय के विचार

मालवीय जी ने वर्तमान शिक्षा प्रणाली पर दुःख प्रकट करते हुए लिखा है कि ''यह कहने की आवश्यता नहीं कि भारत वर्ष में प्रचलित शिक्षा प्रणाली हमारी राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक आवश्यकताओं के लिए पूर्णतया अनुपयुक्त है। हम लोग अंधविश्वास की तरह एक ऐसी प्रणाली का अनुसरण करते चले आ रहे हैं, जिसका निर्माण अन्य जातियों के लिए हुआ था और जिसका उनके लोगो ने बहुत दिन हुए परित्याग कर दिया था।

स्वतंत्र भारत में शिक्षा नीति पर विचार करने के लिए तीन राष्ट्रीय आयोगों–विश्व विद्यालय आयोग (1948–49) माध्यमिक शिक्षा आयोग 1952–53 तथा शिक्षा आयोग 1964–66 का गठन किया गया तीनो आयोगो ने भारत सरकार को अपने सुझाव दिये।

इस तरह शिक्षा आयोग ने सामाजिक एवं राष्ट्रीय एकता के विकास करने के लिए सुझाव दिये सार्वजनिक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय लक्ष्य के रूप में सामान्य विद्यालय प्रणाली को स्वीकार किया जाए। प्रत्येक शिक्षा संस्था में सामाजिक सर्व सामुदायिक सेवा कार्यक्रम का विकास किया जाए। प्रत्येक जिले में श्रम एवं सामाजिक सेवा शिवरो का प्रबन्ध किया जाए व प्रत्येक छात्र की उपस्थिति अनिवार्य कर दी जाए। और कहा शिक्षा का भारतीकरण किया जाए।

अतः शिक्षा का भारतीकरण से तात्पर्य है– कि भारतीय लक्ष्यों की ओर ले जाने वाली ऐसी शिक्षा पद्धति जो भारत की आवश्यकताओं व आकांक्षाओं के अनुरूप हो भारतीय धर्म संस्कृति, सभ्यता, दर्शन व आवष्यकताओं पर आधारित हो भारत के सामाजिक आर्थिक राजनीतिक षैक्षिक धार्मिक व सांस्कृतिक दृष्टि से भारतीय परिस्थितियों के अनुकूली हो जिससे चरित्रवान,नैतिक, ईमानदान, तथा देशभक्त नागरिकों का निर्माण किया जा सके अतः ऐसी शिक्षा प्रणाली का निर्माण भारत के विभिन्न महापुरुषों व शिक्षाविदों के द्वारा प्रस्तुत किए गये विचार शिक्षा के उद्देष्य पाठ्क्रम शिक्षण विधि सम्बन्धी सिद्धातों का चयन व मूल्यांकन सम्भव है। इसी विश्वास के साथ शोध कत्री ने प्रस्तुत अध्यपन महान दार्शनिक व शिक्षा शास्त्री महायोगी अरविन्द घोश और स्वामी दयानन्द सरस्वती जिनके जीवन दर्शन का आधार भारतीय आदर्शवाद है के शिक्षा सम्बन्धी विचारों का विस्तृत तथा गहन अध्ययन करने का प्रयत्न किया गया है। जिससे वर्तमान शिक्षा प्रणाली को उनके विचारों के अनुरूप ढाल कर इस प्रकार उपयोगी बनाने हेतु सुझाव दिये जा सके। कि देश में आत्मनिर्भर समाजसेवी विनयशील, संयम दृढ निश्चय नागरिको का निर्माण कर सके अतः यह सब सोच कर शोधकत्री ने अपने शोध का यह विषय चुना–

महायोगी अरविन्द एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती के शिक्षा दर्षन की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अवश्यकता

शोधकत्री का विश्वास है कि वर्तमान में प्रचलित मैकाले द्वारा दीगई शिक्षा प्राणाली के भारतीकरण का पुनर्निर्माण की दृष्टि से महायोगी भरावन्द एवं महर्शि दयानन्द सरस्वती के शैक्षिक विचारपूर्णतया आज भी व्यवहारिक है।

प्रस्तुत शोध कार्य शिक्षा जगत की समस्याओं का एक अपूर्ण समाधान है। श्री अरविन्द घोष कहते हैं – वह दिव्य ज्ञान का सच्चा सैनिक विश्व को प्रभु की षरण में लेने वाला योद्धा और मनुष्यों व संस्थाओं का शिल्पी व प्रकृति द्वारा आत्मा के मार्ग में उपस्थित की जाने वाली बाधामों का वीर विजेता था। मेरे समझ आध्यात्मिक क्रियात्मकता की एक शक्ति सम्पन्न मूर्ति दयानन्द की उपयुक्त परिभाषा प्रतीत होती है।

महर्शि दया नन्द सरस्वती ने कहा 'कुण्वन्तो विश्वगार्यम' यह मंत्र उस महान आत्मा की देन है जिनका संकल्प था कि समूचे देश को, समूचे राष्ट्र को एक आर्यवर्त में बदल दिया जाये। इसके लिए उन्होंने देश को नई दिशा दी तथा वास्तविक आर्यग्रंथों से समाज का परिचय कराया असुविधा का नाश हो और विद्या की वृद्धि हो समाज उन्नति अपनी उन्नति का आधार है –ऐसा कह कर उन्होंने ने जाग्रति का संदेश दिया।

और श्री अरविन्द कहते हैं हम प्राचीन भारत की महानता का रहस्य उसकी ऊपरी बातों को देखकर नहीं लगा सकते है। उन्होंने अपनी शिक्षा को ब्रहाचर्य की दृढ नींव पर खड़ा किया था शरीर के अंदर जितनी शक्ति और ऊर्जा बचती उसे बुद्धि की सेवा में लगाया जाता था उसी से उनकी मेधा –ग्रहण शक्ति, घी बुद्धि की सूक्ष्मता स्मरण की शाम्त और सृजनात्मक अन्वेशण शक्ति का विकास होता था। अध्यापक का कर्तव्य था कि विद्यार्थी के अन्दर के तमस को निकाले, रजस पर लगाम लगाये औश्र सत्व को जगाये

अध्ययन का महत्व

राष्ट्रीय दृष्टिकोण से इस विषय का अध्ययन करना आवश्यक है। कि जिससे पता चलता है। कि प्राचीन काल में शिक्षा व्यवस्था कैसी थी। क्या स्वरूप था। दर्शन का प्रभाव कितना था ? महा पुरुषो विचारकों और मनीषियों का चिन्तन, मनन राष्ट्र की अक्षय निधि थी। डी0 एस0 कोठारी ने कहा– कि प्राचीन चिन्तकों ने जीवन की मूलभूत समस्याओं के प्रति अन्त दृष्टि जो कि कुछ अर्थों में अद्वितीय तथा विश्व की घटनाओं से सम्बन्धित अंतर्दष्टि का विशुद्ध सार है। प्राप्त की भी फिर से अर्थ प्राप्त करना तथा उसे एक नये बोध स्तर पर प्रतिष्ठित करना हमारा ध्येय और दायित्व होना चाहिए।

अध्ययन का उद्देश्य

कुछ मनुष्य एक प्रगतिशील प्राणी है वह सदैव आगे बढ़ना चाहता है, ऊँचा उठना चाहता है। वह जीवन में जो कुछ भी प्राप्त करना चाहता है उसे निर्धारित लक्ष्यों के रूप में लेकर आगे बढ़ता है। यदि ये जीवन के उद्देश्य न हो। तो जीवन सार हीन हो जायेगा क्यों कि उद्देश्य से मनुष्य जो कुछ भी प्राप्त करता है। उसकी आर्दश स्थिति की ओर संकेत करते हैं इसलिए रिवलीन ने अपनी पुस्तक इन साइक्लोपीडिया ऑफ मॉडर्न एजूकेशन में लिखा है – कि उद्देश्य के बिना किसी कार्य की कल्पना नही की जासकती जब भी कोई कार्य प्रारम्भ किया जाता है तब उस कार्य का है कुछ न कुछ उद्देश्य पृष्ठ

भूमि पर अवश्य होता है। बिना उद्देश्य के कार्य को तो सफलता मिल पाती है और न ही वह सार्थक सिद्ध होता है। इस सम्बन्ध में जाने डी वी का कथन है –''उद्देश्य सहित कार्य करना ही कुशलताया बुद्धिमानी पूर्वक कार्य करना है'' जब किसी कार्य को करने का उद्देश्य निर्धारित हो जाता है तब वह कार्य उद्देश्यों की प्राप्ति को ध्यान में रखते हुए कुशलता पूर्वक किया जाता है। और श्रेष्ठ होता है।

श्री अरविन्द के शैक्षिक विचार – उन्होंने अपनी पुस्तको – नेशनल सिस्टम ऑफ एंजूकेशन और ऑन एजूकेशन से पता चलते हैं कि शिक्षा के सम्बन्ध में अरविन्द जी के विचार व्यापक थे। मनुष्य के अन्तः करण के चार स्तम्भ मानते थे। चित्त मानस बुद्धि ज्ञान उनके अनुसार शिक्षा द्वारा हमारे चारों स्तरों का विकास होना चाहिए। वे विकास के सिद्धांत को मानने वाले थे। इस लिए मनुष्य की मूल शक्तियों में भी विश्वास करते थे। उनके अनुसार शिक्षा का विधान बच्चे की मनोवृत्ति के अनुसार होना चाहिए।

श्री अरविन्दो एक जगह ये भी लिखते हैं कि सच्ची शिक्षा को मशीन से बना हुआ सूत नहीं होना चाहिए अपितु इसको मानक प्राणी के मस्तिष्क तथा आत्मा की शक्तियों का निर्माण या जीवित उत्कर्ष स्वरूप होना चाहिए।

महाऋर्षि दयानन्द सरस्वती धर्म मर्मज्ञ आर्य समाज के संस्थापक समाज सुधारक और राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचारक के रूप में अधिक प्रसिद्ध हैं। इस सब कार्य के लिए उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन किया था और इस लिए ही वे शिक्षा जगत में शिक्षा शास्त्री के रूप में जाने जाते हैं स्वामी जी प्राचीन भारतीय पद्धति के सबसे बड़े समर्थक थे। उन्होंने अंग्रेजी के माध्यम से दी जाने वाली शिक्षा पद्धति का घोर विरोध किया। और प्राचीन परम्परा–नुसार वेद उपनिषद और समृतियों की शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया।

इस प्रकार स्वामी जी ने सार्वभौमिक शिक्षा का प्रतिपादन किया उन्होंने कहा कि माता–पिता तथा राज्य के लिए यह आवश्यक है कि सभी को अनिवार्य रूप से शिक्षित किया जाए। ताकि वे स्वयं वेदो का अध्ययन कर उनका अनुकूल आचरण करे तथा दूसरों के द्वारा दी गई व्याख्याओं को मानने के लिए वाध्य न हो। स्वामी जी ने शिक्षा को व्यक्तित्व दृष्टिकोण के साथ–साथ सामाजिक दृष्टिकोण से भी देखा अतः उन्होंने शिक्षा के द्वारा व्यक्ति में समाज सुधार की योग्यता का विकास करना बताया उनका विचार था कि शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम है जो समाज में प्रचलित कुप्रथाओं एवं अंध विश्वासों को समाप्त कर सकता है अता विद्यार्थियों को ऐसी शिक्षा दी जाये कि वे समाज में सुधार कर सके, उसके लिए उन्हें कितनी भी कठिनाइयों व मुसीबतों का सामना करना पड़े।

स्वामी जी ने अपने उद्‌बोधन में कहा था – ''आपके पूर्वजों में कोई कमी नहीं थी। वे जंगल मे बसे आशिक्षित नहीं थे। वे इस संसार को जागष्त करने वाले महापुरुष थे। आपका इतिहास पराजय की गठरी नहीं वह विश्व विजेताओं को गौरव गाया है। इस गर्व का अनुभव कीजिए। अपने पूर्वजों के प्रति तिरस्कार की भावना जगाने वाली आधुनिक शिक्षा पर धिक्कार है।

निष्कर्ष

इस प्रकार श्री रवीन्द्र नाथ टैगोर ने स्वामी जी के बारे में कहा था – ''मेरा सादर प्रणाम हो उस महान गुरू दयानन्द को जिसने भारतवर्ष को अविधा, आलस्य और प्राचीन एतेहासिक तत्व के महान से मुक्त कर सत्य और पवित्रता की जाग्रति में लाना था। उसे मेरा बराम्बार प्रणाम।''

इस प्रकार श्री अर्विंद की धारणा थी की शिक्षा के द्वारा व्यक्ति में यह विश्वास जाग्रत करना है कि मानसिक तथा अत्मिक दृष्टि से पूर्ण सक्षम बन सके तथा समय समय अतिमानव *(Superman)* की स्थिति में आ जाये अतः शिक्षा द्वारा व्यक्ति की अन्तर्निहित बौधिक एवं नैतिक क्षमताओं का सर्वोच्च विकास हो सके।

संदर्भ

1. प्रसाड़, डॉ0 वमी वैधनाथ. विश्व के महान शिक्षा शाखी. बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमीः पटना–3. पृष्ठ **330.**
2. राधाकृष्णन, सर्वपल्ली. प्राच्य धर्म और पारचाव्य विचार. राज्यपाल एण्ड सन्सः दिल्ली. पृष्ठ **970.**
3. श्री अरविन्द. सिन्थेसिस ऑफ योग. पृष्ठ **2.**
4. श्री भरविंद. (1948). ए–सिस्टम ऑफ नेशनल एजूकेशन आर्य पब्लिशिंग हाउसः कलकत्ता।
5. श्री अरविंद. (1952). इन्टीगरल एजूकेशन कम्पाल्ड बाई डाइन्दिय सेन. श्री अरविन्द इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी सेंटरः पण्डिचेरी. पृष्ठ **4.**
6. रायशुक्ल. शिक्षा दर्शन (शिक्षा में मानवतावाद). इलाहबार. 994. पृष्ठ **367.**
7. पाण्डेय, डॉ0 राम. समकालीन भारतीय शिक्षा दार्शनिक विनीत पब्लिकेशनः मेरठ पृष्ठ **37.**
8. रूसो, जे.जे. ३ इयाइल. पृष्ठ **25.**
9. (1976). पुरोधा. 1 अक्टूबर. पृष्ठ से उद्धृत।
10. 280 रू इन्दिरा सेन. श्री अरविन्द इन्टरनेशनल।
11 वाई डा फ्लेवर. पृष्ठ **32.**